आज की साकार मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:10-11-14

हमें आत्मा, परमात्मा और ड्रामा चक्र का सारा राज (razz) समझा कर आप समान टीचर बनाने वाले, बेहद के बाप-टीचर-सतगुरु ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें अब टीचर बन सब को मन वशीकरण मंत्र सुनाना है, यह तुम सब बच्चों की ड्युटी है.

आज की बाबा कि मुरली अनुसार, राजयोग टीचरों को बाबा के हरेक नये बच्चों दो मुख्य बातें खास सिखलानी चाहिए - १. आत्मा-परमात्मा का ज्ञान देकर कैसे स्वयं को आत्मा समझ उस परम-प्यारे परमात्मा को याद करना है. २. स्वयं को आत्मा समझकर कैसे अपना स्वदर्शन चक्र घुमाना है या कहे कैसे बाप से मिलने वाले वर्से को याद करना है. यह दो बातें मुख्य इसलिए है क्योंकि इसे ही आत्मा का कल्याण होना है (आत्मा पावन बननी है) और वर्से को याद करने से आत्मा को खुशी-खुशी, उमंग-उत्साह में रहकर इस त्याग, तपस्या और वैराग्य के मार्ग पर चलने का बल मिलता हैं.

बाबा ने कहा, तुम सब को टीच करके रास्ता बताते रहते हो मनमनाभव का. बाप ने तुम्हारे पर यह ड्यूटी रखी है कि मुझे याद करो और फिर टीचर भी बनो. टीचर के रुप में सृष्टि चक्र की नॉलेज देनी पड़ती है लेकिन उससे आत्मा को कोई फायदा नहीं. आत्मा को फायदा तब हो जब बाप को याद करें और वर्से को भी याद करें.

बाबा ने आज की मुरली में हम बच्चों को बाप की और वर्से की याद पक्की कराई है.

स्वयं को आत्मा समझ बाप को याद करने की प्रैक्टिस के लिए नीचे दिये हुए महा-वाक्यों को पढ़े.

- मुझे बाप को जरूर याद करना पड़े. एक बाप की याद से ही मेरे पाप मिट जाने हैं. हम पाप आत्मा हैं, इसलिए बाप ने हमें कहा है - अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जाये. बाबा ही पतित-पावन है.

- बाबा ने कहा है हमारी आत्मा अभी पतित बनी है, जिस कारण हमारा शरीर भी पतित बना है. इस सृष्टि चक्र के आदि में हम पवित्र थे अब हम अपवित्र बने है. अब बाबा को याद करने से हम वापस पवित्र बन जायेंगे. हमें उठते, बैठते, चलते बाबा को याद करना ही है.

- सारा कल्प पार्ट बजाते हम अपने घर को भूल गये थे. बाप को भी नहीं जानते थे. सारे कल्प में एक ही बार बाप खुद आकर अपना परिचय देते हैं – इन भाग्यशाली रथ, ब्रह्मामुख द्वारा.

बाबा कहते हैं मैं पतित-पावन हूँ. बाबा ने कहा, हे बच्चों, देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मुझे याद करने से ही तुम पावन बन फिर से अपने घर मुक्तिधाम पहुँच जायेंगे.

- बाबा ने ही हमको बताया कि जैसे हम आत्मा हैं वैसे वह परम आत्मा है. शक्ल में और कोई फर्क नहीं है. जैसे हमारी आत्मा वैसे बाप भी परम आत्मा है. बाप परमधाम में रहते है तो हम भी बाबा के साथ परमधाम में रहते हैं. वह भी बिंदी है, हम भी बिंदी हैं.

- बाबा, आपको याद करने में हम आत्मा को कोई तकलीफ़ नहीं होती. बाबा, आप आये हो हमें पावन बनाकर वापस घर ले जाने. बाबा, आपकी याद से ही आप हमें सेकण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हो.

<u>स्वयं को आत्मा समझ वर्से को याद करने की प्रैक्टिस के लिए नीचे दिये हुए महा-वाक्यों को पढ़े.</u>

- बाबा आप सच कहते हो, ड्रामा प्लेन अनुसार भक्ति मार्ग में हम अपने आप को और आपके सत्य, चैतन्य स्वरूप को नहीं जानते थे. हम आत्मा, अपने बाबा को ही नहीं जानती थी! बिल्कुल निधन के बन गई थी. आपको न जानने के कारण हमने आपकी बहुत ग्लानि की है और इसके कारण ही आप हमसे दूर हो गये. कल्प पहले आपने ही हमको देवी-देवता बनाया था और हम आपको ही भूल गये. अब हम आत्मा वापस आपको ही याद कर फिर से सतोप्रधान बन आपसे पुरा वर्सा लेगी.

- बाबा आपने हमें यह रुहानी धंधा अच्छा दिया है - हम स्वयं को आत्मा समझ आपको याद करते है और ८४ के चक्र को भी याद करते है. आप को याद करने से हमें मुक्ति मिलेगी और पढाई को याद रखने से जीवनमुक्ति मिलेगी. जितना हम आपको याद करेंगे और पढ़ाई पर ध्यान देंगे उतना ऊंच पद पायेंगे.

- आपको याद करने से हम आत्मा अभी सतोप्रधान बनेंगी और फिर सतयुग में हमें चोला (शरीर) भी सतोप्रधान मिलेगा.

- हम सतयुग में पदमापदम साहूकार थे. बहुत पवित्र थे, बहुत सुखी थे. वहाँ कोई झूठ, पाप आदि कुछ होता नहीं. हम सारी दुनिया के मालिक थे. बाबा, आप जो हमें देते हो और कोई नहीं दे सकता. कोई कि ताकत नहीं जो हमें आधाकल्प के लिए सुख दे. बाबा, आपने तो हमें भक्तिमार्ग में भी बहुत सुख या अथाह धन दिया था.

बाबा आपका लाख-लाख शुक्रिया. ॐ शांति.